अन्तरा-शब्दशक्ति
महकते अहसास
काव्य संग्रह
नवनीता कटकवार

महकते एहसास

(काव्य संग्रह)

नवनीता कटकवार

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- "978-93-86666-87-1"

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन
मुख्य कार्यालय - १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म..प्र) ४८१३३१
दूरभाष- (कार्या..) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९
अणुडाक- antrashabdshakti@gmail..com
अंतरताना- www..antrashabdshakti..com
प्रथम संस्करण २०१९- नवनीता कटकवार
मूल्य - ६०..०० रुपये
आवरण चित्र- संदीप सोनी,वारासिवनी
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
MAHAKATE EHSAS BY NAVNEETA KATAKWAR
वैधानिक चेतावनी - इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

भूमिका

मेरी किताबों की श्रंखला में दूसरी कड़ी है, सहज सरल शब्दों में दिल की बातों को रखने की मेरी एक कोशिश।

ना जाने कितनी बातें,यादें,कसमे शिकायते होती है सभी को ज़िंदगी से, ज़िंदगी में शामिल लोगो और हालातों से, कल्पना से हकीकतों तक की मन:स्थितियों कभी दर्द, कभी बेशुमार मुहब्बत, कही उदासी तो कही दबी छुपी ख्वाहिशें, भूली हुई बातें तो कभी पाने खोने की चुभन,..!

ज़िंदगी की इन्ही जद्दोज़हद और उलझनों को चंद पक्तियों में कहने का मेरा दूसरा प्रयास है ***महकते अहसास***

नवनीता कटकवार

महकते अहसास

1
महकते एहसासों के सिलसिले
अब तुमसे है
जो शामिल है दिल में धड़कन की तरह
वो सांसों की रवानी अब तुमसे है

2
खामोशिया तनहाइयाँ मायूसियाँ
सारी शामे खुद से गुफ्तगू
ज़िंदगी तेरी ये बेरुखी
कब तक? कहा तक?

3
कल देर तलक चाँद को तकते तकते,
नजर धुंधला सी गई,
ना जाने फिर से!!
अपनी किस दुखती रग पर
हाथ रख दिया मैंने।

4
अब अल्फ़ाज़ नहीं मेरे पास
जो बयान कर दे
क्या क्या गुजरी इस मासूम से दिल पर

5
अश्कों में बह गये ख्वाब सारे
सारी रात करवटो में कट गई

6
कुछ गलतफहमियाँ ही अच्छी है रिश्तों में
एहसास एहसानों में नहीं बदलते

7
अपने वज़ूद के टुकड़ों की
तलाश में जब हम निकले
उफ़ !!
गुनहगार अपने ही निकले..

8
आज फिर बहला ना पाये
अपने दिल को
आँखे छलकती रही रात भर
ना जाने क्यूँ ?

9
मन की रफ़्तार ज़ारी है..
भाग रहा है आज भी..
उन ख्वाहिशों के पीछे
जो कभी मुक़्क़मल ना हो पायेगी

10
आओ फिर से मिले हम तुम,
इस बारिश में,
कि जब हम तुम से जुदा हो,
अपने अश्कों को बारिश की बूदा में छिपा ले,
जी भर के रोये
और इल्ज़ाम बारिश पर लगा दे ।

11
तेरे क़र्ज़ उतारते उतारते थक से गये हम।
ए ज़िन्दगी अब तू हमें बड़ी मंहगी सी लगती है।

12
महफिल ए तन्हाई में साथ है हमारे
तेरी कुछ बातें, यादे कुछ पल,
और हाँ एक अधूरी कहानी।

13
कमरे के इक कोने में बैठे बैठे,
उलझे रहते है सवालों में,
गुणा, भाग, जोड़,घटाना,
देख लिया सब करके,
ए ज़िन्दगी सुना तूने,
हम बड़े घाटे में चल रहे है।

14
सफर ए ज़िन्दगी नवी,
राहे इतनी आसान नही,
बस एक मलाल है।
ये हुआ नहीं वो मिला नहीं...

15
फिर शाम की खामोशी,
फिर एक नाकाम कोशिश,
अपने दिल से जीत जाने की।

16
जब बंया ना कर पाये हम
अपने ज़ज़्बातों को लफ्ज़ों में
सच मानिये ये इंतहा है...
ख़ुशी,गम या बेहिसाब दर्द की

17
ज़िंदगी हर पल हंसती है मुझे पर,
उन लम्हों के लिये जो हमने,
गुज़ार दिये खुद को भूलकर

18
सजाई है तुम्हारे लिए, अरमानों की महफ़िल
सुनो!!तुम भी एहसासों की कोई ग़ज़ल लेते आना

19
ज़माने की खुशियाँ कदमों मे थी हमारे,
तुम्हे जो पा लिया था मैंने,
ख्वाब टूटा नींद से जागे,
एक चुप सी लगी है तब से।

20
मेरी हर खुशी को लग जाती है अब नज़र
माँ अब बचपन वाला नज़र का टीका जो नहीं लगाती

21
सुबह से शाम शाम से रात,
उलझे रहते है तेरे ख्यालों में,
आलम ये है इस दिल का,
हमसफ़र तू ना सही तेरा ख्याल ही सही।

22
तेरी कुछ बातें,यादें,जो दे जाती है दिल में दस्तक
कभी अश्क़,कभी रश्क़ तो कभी जश्न बनकर ।

23
गुजर ही जाती है ज़िंदगी एक सुकून में,
गर खबर हो कोई दिल धड़क रहा है,
शिद्दत से आपके लिये।

25
लाख तलाशे शब्द पर कर ना पाये शुक्रिया उस रब से
जब मेरी ज़िंदगी में रब की रहमत बनकर
आई जीजी माँ, जीजी माँ बस नाम ही काफी है

26
पलकों पर ख्वाहिशों का बोझ बड़ा भारी है
जीवन हरपल एक संघर्ष सफर ज़ारी है

27
मुख़्तसर सी थी बातें दिल की,
जो तुम समझ जाते,
खुदा की बनाई हसीन दुनिया में,
यक़ीनन एक आशियाना हम भी तुम संग बसाते ।

28
हर वक़्त मिले तारीफ़
ये तो लाज़मी नहीं है
कुछ कड़वे घूँट भी मर्ज़ ठीक कर
तबियत मस्त कर जाते है।

29
नादा सा है ये दिल,
कश्मकश में रहता है अक्सर,
कभी छू लेना चाहता है चाँद को,
तो कभी टूटते तारे से भी कुछ नहीं मांगता

30
सुन ज़िंदगी इस से पहले की खो दे हम खुद को
आँखे बंद कर, एक गहरी साँस लेते हैं ।
चल मनचाहा अपना ले,
और अनचाहे से परे हो लेते है।

31
सही समय पर जो मरहम ना लगे,
ज़ख्मों पर तो वो नासूर बन जाते है,
कुछ रिश्ते भी ज़िंदगी में यही सबक सीखा जाते है।

32
दिल जो धड़क उठा,
साँसे थम सी गई
एक झोंका खुशबू भरा जो पास से गुजरा
दिल को जैसे यकीं हो चला
तुम यही कही मेरे आसपास हो

33
राहे इश्क़ की काटों भरी संभलिये जनाब
दिलोदिमाग की कश्मकश में जो टूट जाये दिल
फिर ना कहिये ज़माना है बड़ा ख़राब

34
दीप जले चहुँओर, रोशन हुआ हर घर,
इंतज़ार में उनके कितने आस के दीप जले बुझे
हाले दिल से वो है बेखबर,
बिना दिये के बाती है कितनी अधूरी,
कोई दे दे उनको भी ये खबर।

35
जब से फना हुआ ये दिल आप पर
तेरा मेरा कुछ ना रहा, है अब हम..
एक दिल एक धड़कन में अक्स तुम मेरा दर्पण ।

36
सुन ज़िंदगी..
ऐसा नहीं की तंन्हा है तू..
साथ तेरे कोई साया नहीं..
पर जब भी तेरे बारे में सोचती हूँ..
ना जाने क्यूँ ..???
डूब जाती हूँ..... अश्के समुन्दर की गहराई में ।

37
ज़िंदगी की इस कड़ी धूप से
भागती दौड़ती ज़िंदगी से..
फुरसत निकाल कुछ देर तो छाँव मे बैठ जाये
करने आत्म-मथंन,समेटने तितर-बितर
हो रहे सपनो आशाओं..मन के घर को !!

38
मुकम्मल ना हो पाई जो, हमारी कहानी..
किसी राह में,फिर मिले जो हम..
ना पहचानेगे इक दूसरे को..
दिल से फिर करेंगे बेईमानी

39
ज़िंदगी तेरी शतरंज समझने में
हमे कुछ ज्यादा वक़्त लगा, मिलती रही शय..
होती रही मात पर अब जब माहिर हुये है
इस खेल में,तब से हार का हमने स्वाद नहीं चखा।

40
ज़िदगी का कोई मकसद अब बाकी नहीं..
तुमसे ख़त्म जो हो रहे है मोहब्बतों के सिलसिले..
पूछता है ये दिल बार बार
ये प्यार था..या मेरा देखा हसीन ख्वाब था..
आज मिली है उनसे ही मुझे ज़िंदगी भर की सजा
जो कल तक थे ..मेरे जीने की हसीन वजह

41
कभी दोस्तों में बसर,
तो कभी दुश्मनों में गुजारा किया
कही दर्द दिया किसी अपने ने
तो कोई हमदर्द बन सहारा बना
तमाम उम्र का हिसाब अदा कर

ले जिंदगी अब हमने तुझसे भी किनारा किया..

42
सूरज की पहली किरण
जो मैंने अपने आगोश में समेटी..
उम्मीदे हौले से मुस्कुराई..
हौसले हाथ थामे ले चले मुझे..
उन राहो में..जो अब नामुमकिन नहीं
एक ज़िंदगी को सँवारने..
अब तक जो दूर नज़र आती थी..उन मंज़िलो को पाने ...

43
सुनो! तुम मेरे ख्वाबों,दिलकश खयालों का..
एक वो हसीन झूठ हो..
जिसके संग जीते रहे है हम..
बेमिसाल,बेहिसाब खूबसूरत लम्हे..
मान बैठे है अब इसी झूठ को..
अपने जीने की वजह..
जो दिल की धड़कनो में खलल डाले..
ऐ ज़िंदगी सुन अब वो सच हमें हरगिज गवारा नहीं ..

44
तेरी आँखो में ना देख ले कोई अक्स मेरा ..
इस ख्याल से रुख पे परदा किये बैठे है ..
सुनते थे मिलती है इश्क में बड़ी रुसवाई
फिर भी ये हसीं जुर्म किये बैठे है

45
नही है जिसका कोई माँझी..
एक ऐसी जीवन नदिया बहती जाती है..
अंजाम नज़र आता है हर शख्स की निगाहो में ..
फिर भी ये ज़ीने के सजा दिये जाती है।

46
कोई तो हो ऐसा कही..
गजल की तरह जो मुझे गुनगुना ले..
मुददते हुई यू ही तन्हा जीते जीते..
कहती है ज़िंदगी अब तू भी..
किसी की आँखो में पनाह ले।

47
आजकल बहुत मुस्कुराते है हम..
बस ऐसे ही..
दुश्मनो के हौसले पस्त कर कर जाते है हम..
ये भी एक राज है ए ज़िन्दगी..अक्सर
तन्हाई में जब भी आईने में देखते है खुद को..
ये नकली मुखौटा उतार देते है हम।

48
जहाँ मिल जाती है आसमा से धरती ..
कही ऐसे ही
एक अधूरी ज़िंदगी तलाश रही है अपने क्षितिज को..

49
हमने ज़माने देखी तेरी रीत
तेरी हां में जो हम हां मिलाये
तब तक बनी रहेगी प्रीत....
जो ना कहे किसी दिन..
पूछे कुछ सवाल..
मचे बवाल, बैरी बने सब
सच खड़ा में मौन चौराहे पे..
झूठ की हो जाए जीत।

50
तेरे बाद तुझ जैसी ही हसीन होगी वो
जिसे हम गले लगायेगे, तुम दो लाख सदाए
फिर वापस हम नहीं आएंगे

51
कोई पूछता रहे हाले दिल.. मेरा
यही ख्वाहिश है और तमन्ना है आखिरी
बस..कोई अपना हो कही
ज़िंदगी है जब तक ।

52
इस से पहले की हम...
अफसाना बन के रह जाए।
क्यों ना एहसासों को शब्द देते जाए।
जो मिला नहीं हमे ज़माने से...
कुछ ऐसी कमियों

और शिकायतों का जिक्र करते जाए।

53
ज़िंदगी अब ऐसे मुकाम में आ खड़ी है
जहा दिल को..
किसी भी राहत की उम्मीदे नही है ।
लिख कर जो बदल दे तकदीरे..
लगता है यू..
ये काम अब..
उस रब के बस में भी नहीं है ।

54
एक तेरा ख्याल क्या आया..
सारी रात देखते रहे
चाँद की बादलों में लुका छुपी
नींद नहीं आँखो में
घेरे रहे मुझे कुछ सवाल..
लाख ढूढ़े
पर मिला नही कोई वाजिब जवाब
जो दे जाये इस दिल को सुकूं,करार

55
एक गुलाब हाथ में लिये..
खेल रहे है वही पुराना मासूम सा खेल !!
प्यार है ?? प्यार नही है ??
तोड़ पंखुडिया दर पंखुड़िया ...
पर अब दिल रोक रहा है ।
डरता है ये..खेल के अंजाम से!!

56
एक Teddy ko …
पास में रखकर ...

देखते रहते है चाँद तारों को ...
ये वो दोस्त है ।
जो हमें कभी तन्हा नहीं रहने देता।

57
हम वो नहीं जो मिसाल देंगे..
हम वो है जो मिसाल बन जायेगे..
देती नहीं ज़िंदगी,
हर किसी को ये मौका
माँ तुझसे ही मिली है ये ज़िंदगी
वादा है हमारा..
तुझ पे ही फ़ना कर जायेगे।

58
जब से चख कलम ए स्याही ने,
बेजान कोरे पन्नों को नवी,
तब से संवर गई एक ज़िंदगी,
महक उठी एक शख्सियत।

59
जियेंगे ज़िंदगी अपनी ही धुन में..
ना पूछेंगे सवाल,ना ही अपना कोई हिसाब देंगे..
सोचेंगे उस रोज ख़त्म हुये ज़िंदगी,
जब चंद बचे अपने, हमारी धड़कनों पर ऐतराज लेगे

60
हकीकत में तूने हमें बडा रुलाया है जिंदगी
तेरी ज्यादती अब ख्वाब में भी दखल देती है
भीगी भीगी सी रहती है पलके अक्सर
जागने के बाद

61
बेहिसाब दर्द लिख दिया है हमने
अपने-अपने हिस्से का महसूस कीजिये

63
जमाने से छिपाकर चलते है, अपने अहसासों को
डरते है, हमारी ये दौलत कोई लूट ना ले।

64
जैसे गुजरी है ज़िंदगी,
अब तलक एक खुमारी में,
बस दुआ है रब से,
बाकी भी कट जाये एक मदहोशी में।

65
हर वो बात जो कह ना पाये हम लबों से,
अपनी नज़्मों में लिख देंगे,
तेरा नाम नहीं लेगे सरेआम,
बस रब ए इश्क़ लिख देंगे ।

66
आँखे थी नम,
श्रद्धा सुमन बिछे थे हर डगर में..
भारत माता के लाल
निकले थे अंतिम सफर में
कर गए इतिहास में नाम अमर
छोड़ गए पीछे अपने इंतज़ार,
कसमे, वादे, आँसू
ना जाने कितनी बाते,
यादें अनकही कहानियाँ

67
भेज रही हूँ कब से कान्हा,
तुझको कितनी अर्जी, आज फिर उदास हूँ,
दिल को बहला गई, कि फिर खारिज हुई,
मेरी ये भी अर्जी, नाराज हूँ तुझसे बहुत,
अब तू कुछ दे ना दे आगे तेरी मर्जी ।

68
जमाने से छिपाकर चलते है, अपने अहसासों को
डरते है, हमारी ये दौलत कोई लूट ना ले।

69
कोई ना कोई हुनर तो बख्शा है
उस रब ने हर किसी को बस
निखरना या बिखरना छोड़ दिया है
इंन्सा के हाथ में

70
ऐसे क्या अड़ी है,ज़िंदगी तू ज़िद्दी बड़ी है,
अब ना चलने देंगे, हम पर तेरी हुकूमत
ये मन की कश्ती सागर से मिलने चली है।

71
सफर ए ज़िंदगी,
माना मुश्किल है मंज़िल पाना
गर हौसले हो कुछ कर गुजरने के,
राहे खुद बा खुद आसान हो जाती है।

72
गर प्यार से बढ़ाये कोई हाथ,
तो उसे थाम लीजिये, तजुर्बा कहता है,
ये ज़िंदगी का मिलते नहीं मेंहरबा,
फिर उस खुदा से चाहे मिन्नतें लाख कीजिये

73
शुक्रिया तो अदा करना तो बनता है
तुझ से ऊपरवाले
भले ही छोटी सी सही
पर तूने मुझे मेरी एक पहचान दे ही दी

74
काबिल थे तेरी नज़रों में ज़िंदगी, तेरे हर इम्तहानों में
खरे उतरते चले गये, चल इम्तहानों का दौर अब खत्म भी कर
और दे दे रिजल्ट 100/100 कि अब हम तेरी आजमाईश से
शागिर्द से उस्ताद बनते चले गये।

75
जब आपकी हर आह्ह, को वाह्ह्ह मिले
यकीं जानिये आपका दर्द का कारोबार चल पड़ा ।

76
जानते थे हम जब ये कलम चलेगी,
मेरी शख्सियत को दुनिया
अपनी अपनी नज़रों से देखती चलेगी,
एक झिझक तो थी ये सोचकर,
सबसे बड़ा रोग क्या कहेंगे लोग,
पर जब से इस मर्ज से निजात मिली,
पा लिया जैसे हमने खुद को।

77
फिर खाली हाथ शाम आई,
एक हिच सी लगी जो हिचकी आई,
फिर दिल को समझा रहे है,
तूने मेरा नाम लिया क्या? तूने मुझे याद किया।

78
सारी शाम, नजरे टिकी रही तेरे इंतज़ार में
दर-दरवाज़ों पर यकीं हो जैसे इस दिल को
शायद कोई आये शायद आहट सी हो

79
लाख समझाया इस दिल को
फिर भी ना इस दिल को करार आया
जो चाहा ना था कभी ज़िंदगी में वही मुकाम आया

80
लगता है तेरा मेरा एक ही हिसाब है ऊपरवाले
तू फ़रियाद बिना कुछ देता नहीं,

और इसे मेरी ज़िद ही समझ,
फ़रियाद करना मुझे आता नहीं।

81
खुद से खुद की बातें किया करते है,
बस इसी तरह उम्मीद का दामन थाम लिया करते है।

82
अजीब फलसफें है तेरे जिंदगानी,
चोट भी तेरी,और मरहम भी तेरा ।

83
कितनी करिश्माई होती है ना ये आँखे,
हर वो राज बंया कर जाती है,
जो जुंबा से कहे ना जा सके ।

84
शामे दिसंबर विदा लेते साल की बारिश,
आज मेरे शहर में आई है लगता है फिर नाकाम हुई,
कोई प्रेम कहानी, किसी का दिल है टूटा,
फिर किसी की आँखे भर आई है।

85
माना तुझसे बेतहाशा प्यार करते है ज़िंदगी,
पर यू तड़पना आहे भरना,मर -मर के जीना,
तेरी ये शर्ते अब हमें कतई मंजूर नहीं ।

86
रूठे हमसे तो रूठे ज़माना चलते रहे है,
सच्ची और नेक राह में फिर क्यूँ करे शामिल,
अपनी फितरत में सर झुकाना ।

87
सबका साथ सबका विकास अब की बार 200 पार,
नारा जो गूंजा मेरे प्रदेश में, ना हुये पूरे वादे, ना इरादे,
टूटी सबकी आस अच्छे दिन तो आये नहीं,
मासूम जनता ने लाख जोह ली बाँट,
दे दिया कश्मकश में फंसी आवाम ने अब हाथों में हाथ,
फिर एक बार बड़ी उम्मीदों और आशाओं के साथ।

88
एक चाहत थी जिन्हे पाने की हासिल है,
वो इस तरह अक्सर ख्वाबों में मिल जाया करते है।

89
जरुरी नहीं की मेरी सदाए दूर तलक जाये,
बस यही काफी है हमारे लिये, तुम से मिल लौट आये।

90
जिस से जो पाया वही वापस लौटाएँगे
शुक्रिया ज़माने तूने इस मासूम से दिल को,
अपना ये रिवाज भी सीखा दिया।

91
जिंदगी तेरे रास्ते पथरीले, धूप बड़ी तेज है
फूलों से नाजुक ख्वाब हमारे, अब मुरझा से रहे है

92
न कोई हमराज़ ना हमदर्द कोई,
बस यू करते है अपने कंधे पर रख कर सर,
समझा लेते है खुद को अक्सर।

93
एक दिन चलते चलते,
अचानक देखा पलटकर
ज़िंदगी हम तुझे कितनी दूर,
न जाने कितनी दूर छोड़ आये।

94
मेरे होठों को मुस्कुराने की,
तुमसे एक वजह मिले,
एक शाम कभी कही तन्हाई में
बिखरती चांदनी के तले,
जो मेरी आँखे तेरी आँखों की गहराइयों से मिले।

95
मेरे दिलों दिमाग की अदालत में,
चल रही जिरह फैसला कुछ यू आया,
कुसूरवार निकले तुम और उम्रकैद मिली हमें।

97
भीड़ में है अब तलक शामिल,
मुकम्मल है ख्वाहिशें,
एक झूठ हम ज़िंदगी मज़े में गुज़ार रहे है,
जानते है नादां है हम,
इस झूठ को सच मान रहे है ।

98
जिंदगी की शतरंज में माहिर,
खिलाड़ियों की चालों में हम उलझते चले गये,
हम ही थे नादान खुद ही बने किले के बंदी,
एक कदम के फासले से
राजा की हिफाज़त करते चले गये।

99

ऐसे ही नहीं हमने लबों पर ख़ामोशी ओढ़ ली,
ऐसे ही नही बेवजह अक्सर रहती आँखो में नमी है।

100
हो इज़ाज़त तेरी तो ये,
गुनाहे आज़िम हम कर ले
सर झुकाये तेरे सामने उस रब से पहले,
तेरी इबादत हम कर ले

101
बेसबब दुनिया में कोई ऐसी शय नहीं होती
लाखों की भीड़ में जो टिक जाये,
किसी शख्स पर नजर
फिर उल्फत में कसूरवार ये नजर नही होगी।

102
नही देती जिंदगी बार बार एक मौका
ए दिल संभल जरा फिर ना मिल जाये
वफा की राहो में धोखा।

103
खुशियो के संग भागती है बेतहाशा जिंदगी
कब कट जाती है शामों सुबह और राते
होती नही खबर
गर हो गम-ए-तन्हाई,
जिस्म पे बोझ सी लगती है साँसे
दूर तलक है अंधेरा,ना जाने कब होगी सहर।

104
जब आप को फर्क ना पड़े,
की क्या कहेंगे लोग,को
सच मानिये उसी पल से आप
असलियत में जीना शुरू करते है।

105
न रखिये किसी से उम्मीद
बस एक काम किजिये
जिंदगी का सफर कुछ यूँ आसान किजिये
बस मुस्कुराइए उस शख्स को देखकर
जिसे आप रोजाना आईने में देखते है।

106
हर पल एक ख्याल,
आकर जो मुझे घेर लेता है,
जो कभी शब्दों मैं ना पिरो पाऊँ इन्हें,
तो ना जाने मेरे कितने
नायाब मोती बिखर जाते है।

107
चले थे एक सफर में जो बन के हमसफ़र
मंजिल आते आते वो शख्स,
ना जाने कब अजनबी बन गया।

108
चंद हसींन यादों के साथ
कुछ लोग मुफलिसी में भी जी लेते है।
छोड़ो भी अब फिक्र कल की
ए जिंदगी फिलहाल ये लम्हे जी लेते है।

109
कब तक सलीके, दिखावे की ज़िंदगी जी जाये
दिल ये कहता है बहुत हुई समझदारी की बातें
अब चल भी..
फिर से !!
बचपन की, मासूमियत से भरी नादानी की जाये..

110
कभी कभी लगता है कि कुछ लिख नहीं पाँऊगी
शब्दों के विशाल सागर की थाह कैसे पाँऊगी
पर जब कलम चल पड़ती है तैयार हो अपनी नोंक पर
बिखरने लगती है स्याही कोरे कागज़ के पन्नों पर
और लिखती जाती है कई अनकही कहानियाँ..

111
एक तेरे कुछ ना कहने से
कितनी खामोश से हो गई ज़िंदगी मेरी ..
दिल की धड़कन, घडी की टिकटिक ही
अब जैसे सारी रात शोर मचाती है

112
तुमने कहा था
गुलाबी रंग खूब खिलता है हम पर
आज अलमारी में दबे गुलाबी दुपट्टे पर नज़र पड़ते ही
अहसास फिर जी उठे

113
पहले आँसुओ से धुंधला जाती थी नज़र..
अब माना हमने ज़िंदगी..ये वक़्त का तकाज़ा है..
आँखो की हिफाज़त करते ये चश्मे
अनुभवों से ज़िंदगी की धुंध साफ़ करेंगे

114
गुलाबी लिफाफे में बंद महकता एक आखरी खत
आज भी है पास हमारे तेरी निशानी बनकर !

115
इत्मिनान से देखते रहते है,
अपनी पुरानी तस्वीरों को अक्सर,
एक वहम ही सही इस दिल को,

कि मेरा वक़्त गुज़रा नहीं,
अब तलक तक वही ठहरा हुआ है ।

116
यूँ ही नहीं किसी शख्स के लिये...
बे-वजह बहते है.. ये अश्क़ साहब!!
कोई दिल की गहराइयों में उतर...
आँखो के रस्ते रुखसती लेता है।

117
माना किस्मत में साथ हमारा नहीं है,
दूर है साहिल,
बह रही है बिन माझी के जो इस नादां दिल की,
कश्ती को मिलता कोई किनारा नहीं है ।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - नवनीता कटकवार
जन्म - 19 जून 1979, मण्डला (म.प्र.)
पिता - स्व. श्री सी.एम. कटकवार
माता - श्रीमती सरोजनी कटकवार
शिक्षा - एम कॉम
मो. - 9407069464
ई मेल - nknavneeta@gmail.com
प्रकाशन - काव्य संग्रह - 'मेरी उड़ान' अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन।
साझा काव्य संग्रह - मातृभाषा.कॉम भाग 2, वूमेन आवाज़ भाग 2, स्त्री तुम सृजक, विवेकानंद एक आदर्श, रंग बरसे (ई-बुक 7)
अंतरा शब्द शक्ति मासिक वेब पत्रिका - नारी विशेषांक
समाचार पत्र लोकजंग, भोपाल एवं अपराधों की दुनिया, इंदौर में प्रकाशित रचनाएँ।
सम्मान - मातृभाषा उन्नयन सम्मान 2019।

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
978-93-86666-87-1
मूल्य- 60/-